भास के नाटक

मध्यम व्यायोग

संस्कृत मूल : महाकवि भास
भाषान्तर : भारतरत्न भार्गव

मंगलाचरण : **(सूत्रधार का गायक दल के साथ प्रवेश। शंख एवं मंगल वाद्य)**

हरि का वामन चरण,
आसुरी वधु–विषाद का कारण।
नीलकमल सा निर्मल भी है,
पर कृपाण सा दारुण।।
उठा नापने तीन लोक को,
जल, थल, अम्बर शोभित।
जन रक्षित हों, मन आनन्दित,
सुखकर, हितकर, वांछित।।

(मंगलाचरण समाप्त होने के साथ ही नेपथ्य से शब्द सुनाई देते हैं। सूत्रधार एवं गायक दल चारों ओर देखते हैं कि आवाज़ किधर से आ रही है।)

ज्येष्ठ पुत्र : तात, ये है कौन ?

घटोत्कच : अरे, रूक जाओ !

(एक वृद्ध ब्राह्मण का पत्नी तथा तीन पुत्रों के साथ प्रवेश ! वे भयभीत बार–बार पीछे मुड़ कर देखते हैं और तेज़ी से बचने का प्रयत्न कर रहे हैं।)

पिता : ओह, कौन है यह ?

तरुण सूर्य की किरणों जैसे,
उलझे–बिखरे केश।
चढ़ी भृकुटि है, पीली आंखें,
तड़ित मेघ सा वेश।

कंठ सूत्र पर, रौद्र भयंकर,
प्रलयंकर उन्मेष ।

ज्येष्ठ : तात, ये है कौन ?
सूर्य चन्द्र जैसी दो आँखें,
कंधे चौड़े और विशाल।
केश सुनहरे, वस्त्र रेशमी,
श्याम वर्ण, दो दाँत कराल।
जैसे किरणें भेद रही हों,
किरणों की माया का जाल।

मध्यम : कौन है ये ?
गज शिशु जैसे दांत, नाक हल,
बाहें मस्त, हस्ति का शुंड,
तम में यज्ञ–अग्नि हो अथवा–
त्रिपुरारी का क्रोध प्रचंड।

कनिष्ठ : तात, ये है कौन, हमको दुखी करता ?
शैल–शिखर पर वज्रपात सा,
या चिड़ियों पर झपटे बाज।
हिरणों पर ज्यों सिंह टूटता,
पुरुष वेश में है यमराज।

माता : हाय, ऐसा कौन जो मुझको डराता ?

(घटोत्कच का प्रवेश।)

घटोत्कच : **(हंसता है)** ठहर जाओ। कहता हूँ मैं ठहर जाओ।
क्रुद्ध गरुड़ के भय से जैसे सर्प भागता
उसी तरह पत्नी बच्चों के साथ
बच कर भागे जाते !
किन्तु असंभव मुझसे बचना।
हे ब्राह्मण रूक जाओ !

पिता : सुनो देवी,
तुम मत हो भयभीत।
पुत्रों, साहस धारण करो।
वाणी इसकी परम सयंमित
है विमर्श से युक्त !

घटोत्कच : **(आत्मगत)** ओह, कैसा कष्ट है !
जानता हूँ,
परम पूज्य उत्तम द्विज होते
इस धरती पर,
फिर भी यह अकर्म करना है मुझको
माता की आज्ञा के कारण !
बड़ी विवशता।

पिता : **(पत्नी से)** देवी,
याद क्या तुमको नहीं
हमको किया सचेत जलक्लिन्न मुनि ने
इस वन में राक्षस गण रहते
अन्ततः हो ही गया यह भय उपस्थित !

माता : **(डरे हुए स्वर)**
ऐसे समय भी आर्य पुत्र
करते नहीं उपाय प्राण रक्षा का।
संकट के क्षण होंगे नहीं समाप्त
यदि हम बैठे रहे, धरे हाथ पर हाथ !

पिता : हाय, मैं कैसा अभागा।
क्या करूँ ?

माता : हम सब मिल कर
सहायता के लिए पुकारें ?

ज्येष्ठ : किसे पुकारें ? कौन सुनेगा ?
यह निर्जन वन,
सभी दिशाएं तम आच्छादित
घिरे हुए हैं हम विशाल वृक्षों से
है अरण्य रोदन जैसा पुकारना।
केवल तापस जन के लिए रहा उपयुक्त
वन प्रान्तर यह !

पिता : उचित कथन है।
तापस जन
या ऋषि–मुनियों का हो सकता है शान्त तपोवन!
सोचता हूँ,
यहीं–कहीं पांडव जन का भी होगा आश्रम
परम साहसी हैं शरणागत वत्सल
दीन–पतित की रक्षा हित संकल्पित
वे समर्थ हैं दुष्ट–भ्रष्ट को करने दंडित !

ज्येष्ठ : तात, किन्तु लगता है,
यहाँ पाण्डव नहीं।

पिता : कैसे जाना ?

ज्येष्ठ : एक पथिक ने कहा कि पांडव
धौम्य ऋषि के महायज्ञ में
गए सम्मिलित होने को सारे जन।

पिता : ओह, तब मारे गए हम।

मध्यम : तात, वे सब नहीं गए,
आश्रम के परिपालन के हित
मध्यम हैं इस वन में स्थित

पिता : यदि यह सच है
तो समझो हैं सारे पांडव वन में

मध्यम : किन्तु वे व्यायाम करने
गए हैं दूरस्थ वन में !

पिता : हाय, अब हो गए निराश हम,
क्या यह विनती करें
कि राक्षस हमें मुक्ति दे ?

माता : हाँ ! यह विचार है उत्तम !

पिता : **(पुकार कर)** हे पुरुष, इधर आओ !

घटोत्कच : **(निकट आकर)** लो, आ गया मैं !
चाहते हो क्या ? बताओ !

पिता : क्या संभव है मुक्ति हमारी ?

घटोत्कच : संभव है, यदि हों तत्पर
वचन–बद्ध होने को।

पिता : कैसा वचन ?

घटोत्कच : मेरी आदरणीय मातु ने
आज किया उपवास
पारण हेतु किसी मनुष्य की आवश्यकता।
मुझको पालन करना उनका यह आदेश।

पिता : माता का आदेश पालने
तुमने पकड़ा हमको ?

घटोत्कच : हाँ ! मुक्ति चाहते
तो फिर सुविचार कर
तीनों पुत्रों में से कोई
एक पुत्र तुम मुझको दे दो !

पिता : अरे क्रूर, ओ मानव भक्षी
वृद्ध और शास्त्रज्ञ पुरुष हूँ।
मुझसे मांग रहा
गुण सम्पन्न शीलवान मेरे बच्चों को,
शान्ति मिलेगी मुझको कैसे ?

मैं हूँ प्रस्तुत !
मुझको ले चल।

घटोत्कच : आप वृद्ध हैं और द्विजोत्तम,
नहीं आपको ले जा सकता।
किन्तु सुनें, तीनों मे से
एक पुत्र यदि नहीं दिया तो
मैं विनष्ट कर दूंगा सपरिवार आपको।

पिता : तुम भी सुन लो,
मेरा भी यह निश्चय,
मैं अपने संस्कारशील इस तन को
होम करूँगा नरभक्षी राक्षस की क्षुधा अग्नि में।

माता : आर्य पुत्र, उचित नहीं यह कथन
पतिव्रता मैं
इस शरीर को त्यागूं कुल की रक्षा के हित,
मेरी इच्छा।

घटोत्कच : क्षमा करें,
नारी नहीं चाहती मेरी पूज्या माता !

माता : क्यों ?

घटोत्कच : वे नारी हैं स्वयं
अतः नारी रक्षक हैं,
नारी भक्षक नहीं।

माता : है विलक्षण आसुरी माता तुम्हारी।

घटोत्कच : क्या मानव–जन पालन करते नहीं
धर्म नारी का ?

(सब निरूत्तरित होकर एक–दूसरे की ओर देखते हैं)

ज्येष्ठ : **(पिता से)** तात, मेरा नम्र निवेदन !

पिता : कहो, पुत्र !

ज्येष्ठ : देकर अपने प्राण करूँ मैं रक्षा,
जाने दें मुझको, मेरी इच्छा।

मध्यम : आर्य, ऐसा ना कहें !
ज्येष्ठ श्रेष्ठ होता है कुल में, और लोक में,
पितरों को भी प्रिय होता है, ज्येष्ठ पुत्र ही
इसलिए कर्त्तव्य समझकर मैं जाऊंगा।
(उपरोक्त पंक्तियाँ, संगीत एवं लयात्मक मुद्राओं के साथ बोलता है। इसके बाद सभी संवाद धीरे–धीरे अपनी लय और गति तीव्र करते हैं और मध्यम के स्वगत कथन तक एक चरमोत्कर्ष बनाते हैं।)

कनिष्ठ : नहीं, नहीं !
अग्रज होते पिता तुल्य
यह शास्त्र वचन है
अतः मुझे अनुमति दें, जाऊँ
मात–पिता की
कुल की रक्षा मैं कर पाऊँ।

ज्येष्ठ : नहीं तात, यह उचित नहीं है
अगर पिता हो संकट में तो
ज्येष्ठ पुत्र करता है रक्षा
सर्व विदित है।
छोड़ो तर्क, हुआ सुनिश्चित
मैं जाता हूँ।
(इस उक्ति के साथ गतियाँ तीव्र होती हैं जैसे ज्येष्ठ जाने के लिए पूरी तरह तैयार है। वह घटोत्कच के निकट आने लगता है।)

पिता : ठहरो तात, रूको। मत जाओ
ज्येष्ठ पुत्र मुझको सबसे प्रिय
त्यागू कैसे ?
वह कुल दीपक, आपद रक्षक
त्यागू कैसे ?

(वह हतोत्साहित सा नृत्य करते हुए ज्येष्ठ के पास आता है और उसे गले से लगा लेता है।)

माता : **(दुःखी स्वर में)**

जैसे ज्येष्ठ पुत्र पिता का बना सहारा,
वैसे ही कनिष्ठ मेरी आँखों का तारा।

(वह नृत्य की गतियों के साथ कनिष्ट के पास आती हैं और ममता पूर्वक उसे अपनी बाहों में भर लेती है। मंच पर मध्यम अकेला रह जाता है।)

मध्यम : मैं किसी का प्रिय नहीं, स्पष्ट है यह !
(घटोत्कच से) हे पुरुष,
अनुमति मिल गई मुझे है मात–पिता की,
भ्राताओं की।
मैं प्रस्तुत हूँ, भोज्य बनूंगा मैं
करें स्वीकार मुझे ही मात तुम्हारी।

घटोत्कच : कुमार, प्रेम तुम्हारा परम विलक्षण
स्वजनों की रक्षा की तुमने
त्याग दिया है जीवन अपना
धन्य–धन्य तुम। **(क्रमशः)**